हमारी जान्हवी

XPRESSIONS 9219552563 | Doc. No.

NMCG
National Mission for Clean Ganga, Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre

Wildlife Institute of India
Chandrabani, Dehradun-248001
Uttarakhand

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

हमारी जान्हवी

बाल कविता पुस्तिका

गंगा जैवविविधता संरक्षण

डॉ संध्या जोशी

बच्चों आज हम आपके बीच कविताओं की छोटी सी पुस्तिका लेकर आये हैं। इस पुस्तिका के माध्यम से हम आपकी अपनी गंगा नदी के विषय में कुछ रोचक जानकारियां देगें। क्या आपको पता है कि गंगा के अनेक नाम है, जिसमें से एक नाम है जान्हवी। हमने गंगा को आपके और नजदीक लाने के लिए पुस्तिका को हमारी जान्हवी नाम दिया है ताकि आप सब गंगा से आत्मीयता के साथ जुड सकें, महसूस कर सकें। गंगा नदी को भारत की जीवन रेखा भी कहा जाता है। भारत की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन में इसकी भूमिका को देखते हुए इसे राष्ट्रीय नदी का दर्जा दिया गया है।

गंगा उत्तराखण्ड के गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है। गंगोत्री से बंगाल की खाड़ी तक ये लगभग 2525 किमी0 का सफर तय करती है। अपने पूरे सफर में ये भारत के पांच राज्यों क्रमशः उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड तथा पश्चिम बंगाल से गुजरती है। गंगा के किनारे रहने वाले लोग इससे कई प्रकार से लाभ उठाते हैं। यह भारत के लाखों लोगों की आजीविका का साधन भी है। गंगा के किनारे की जमीन उपजाऊ होने के कारण इसमें अच्छी कृषि होती है। मछली पालन भी गंगा किनारे बसे लोगों की आय का एक अभिन्न स्रोत है। इसके किनारे कई तीर्थस्थल बसे हैं तथा गंगा के इन किनारों में विभिन्न अवसरों पर अनेक मेले लगते हैं।

गंगा नदी के विभिन्न सामाजिक– सांस्कृतिक पहलुओं से हम सब परिचित हैं, किन्तु इसमें पायी जाने वाली जैवविविधता, इसके अंदर तथा आसपास रहने वाले जीवों के विषय में, तथा गंगा की धारा को निर्मल एवं पर्यावरण के संतुलन को बनाये रखने में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के बारे में लोग कम ही जानते हैं। गंगा कई प्रकार के जीव जंतुओं का वास स्थल है। इसमें डॉल्फिन, कछुये, मगर, घड़ियाल, मछलियां, ऊदबिलाव व पक्षी भी पाये जाते हैं। इस पुस्तिका के माध्यम से हम गंगा की जैवविविधता एवं जलीय जीवों के विषय में छोटी–छोटी कविताओं के माध्यम से तथा महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक जानकारियों को रोचक एवं आसान तरीके से देश के भावी नागरिकों यानि बच्चों का ज्ञानवर्धन करने की कोशिश कर रहे हैं।

आशा है हमारी यह कोशिश बच्चों तक गंगा के इस पक्ष की जानकारी पहुँचा पायेगी।

भूमिका

गंगा नदी को भारत की जीवन रेखा भी कहा जाता है। भारत की अर्थव्यवस्था एंव सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन में इसकी भूमिका को देखते हुये इसे राष्ट्रीय नदी का दर्जा दिया गया है।

गंगा नदी हमारी आस्था ही नहीं बल्कि आजीविका का भी महत्वपूर्ण भाग है। मानव की विभिन्न गतिविधियों के कारण गंगा नदी में लगातार प्रदूषण बढ़ रहा है जिससे स्वंय मानव ही नहीं बल्कि गंगा में रहने वाले जीव–जंतु और वनस्पतियां भी प्रभावित हो रही हैं, जीवों का जीवन संकट में है। गंगा में रहने वाले ये जीव जैसे डॉल्फिन, कछुआ, मगर, घड़ियाल, मछली, मेंढक आदि गंगा को साफ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यदि हम गंगा नदी को निर्मल रखना चाहते हैं तो हमें इन जीवों को बचाना होगा। जिसके लिये हमें मिलकर प्रयास करने होंगे। पर हम ये तभी कर पायेंगे जब हम इन सबके बारे में जानेंगे। तो आओ इस पुस्तिका के माध्यम से हम इनके बारे में जानें और इन्हें बचाने के लिये हाथ बढ़ायें।

01

सुनानी एक कहानी है...

गंगा की कहानी

- गंगा उत्तराखंड के गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है। गंगोत्री से बंगाल की खाड़ी तक ये लगभग 2525 किमी0 का सफर तय करती है।
- अपने पूरे सफर में ये भारत के पांच राज्यों क्रमशः उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल से गुजरती है।
- गंगा के किनारे रहने वाले लोग इसके द्वारा कई प्रकार से लाभान्वित होते हैं। यह भारत के लाखों लोगों को आजीविका उपलब्ध कराती है। गंगा किनारे की जमीन उपजाऊ होने के कारण इस पर अच्छी कृषि होती है। मछली पालन भी गंगा किनारे बसे लोगों की आय का स्रोत है।
- इसके किनारे कई तीर्थस्थल बसे हैं तथा विभिन्न अवसरों पर अनेक मेले लगते हैं।
- गंगा कई प्रकार के जीव जंतुओं का वास स्थल है। इसमें डॉल्फिन, कछुये, मगर, घड़ियाल, मछलियां, ऊदबिलाव व पक्षी पाये जाते हैं।

सुनानी एक कहानी है
ये बात बहुत पुरानी है..
अश्वमेघ किया राजा सगर ने.
अश्व तब लगा धरती पर विचरने
इन्द्र को भय हुआ सिंहासन का अपने
हाथों से लगा जाता राज्य अपने
यज्ञ में हो बाधा, इक तरकीब निकाली
आश्रम में रूक कर जब अश्व ने पनाह ली..
बांधा उसे और रोका रास्ता उसका....
कपिल मुनि को न था भान उसका...
सगर को लगा जब, अश्व है बंधक
न होगा वो पूरा लिया था जो संकल्प
भेजा साठ हजार उसने पुत्रों को अपने
आश्रम में पहुंचे लगे वो बात करने.
मुनि जो उस काल तपस्या में मगन थे...
न अच्छे थे लक्षण न अच्छे शगन थे...
टूटा ध्यान उनका लगे क्रोध करने
किया भस्म राजपुत्रों को मुनि ने..
राजा सगर लगे तब मुनि को मनाने
पूछा फिर उपाय राजपुत्रों को तराने
मुनि तब बोले तभी होगा ये संभव
धरा पर जब होगा गंगा का उदभव...
भगीरथ थे प्रपौत्र महाराजा सगर के
थे पक्के वो ज्ञानी बड़ी कठिन डगर के...
गंगा को लाना अब होगा धरा पर
पुरखों का तारण तभी होगा संभव
भगीरथ तपस्या करने लगे अति भारी
डोलने लगा आकाश डोली धरा सारी
ब्रह्मा के कमंडल में रहती थी गंगा
भय था देवों को उसके वेग प्रबल का
शिव शंकर, से तब किया था निवेदन
जटा पर करें वो अपनी गंगा को धारण
माने फिर शंकर, खोली अपनी जटांयें
गंगा के वेग से कांपी चारों दिशांए
गंगा उतरकर जो धरती पे आई
शिव की जटा में वो आकर समाई
जटा से निकली बनकर वो धारा
भगीरथ के पुरखों को तब उसने तारा..

02

जैव विविधता

- जैव विविधता जीवों के बीच पायी जाने वाली विभिन्नता है।
- जैव विविधता मूलतः दो शब्दों से मिलकर बना है – जीव और विविधता।
- सामान्य रूप से जैव विविधता का अर्थ जीव जन्तुओं और वनस्पतियों की विभिन्न प्रजातियों से है।
- प्रकृति में मानव, अन्य जीव जंतु तथा वनस्पतियों का संसार एक दूसरे से इस प्रकार जुड़ा है कि किसी के भी बाधित होने से सभी का संतुलन बिगड़ जाता है और अन्ततः मानव जीवन उससे प्रभावित होता है।

क्या तुम जानते हो ???

क्या तुम जानते हो ???
किसने बनाई धरती प्यारी,
किसने बनाये नभ और तारे,
किसने बनाया फूलों को,
और किसने बनाये जीव सारे,
सोचो जरा तुम अकल लगाकर,
कैसे हम सब जीते,
और कैसे है सब आत्मनिर्भर,
कैसे जुड़े हैं सब आपस में,
और कैसे हो एक दूजे पर निर्भर,
इसे जानने की खातिर,
जरा अपना ज्ञान कुछ और बढ़ाना होगा,
समझना होगा जीवन चक्र,
और जैव विविधता को जानना होगा,
जैव विविधता से मतलब है,
जग में जीवन का होना,
खाना–पीना–मरना,–जीना,
जागना और सोना,

चलो सुनाते हैं...

चलो सुनाते हैं,
हम तुमको जीवन की कहानी,
न इसमें राजा है, ना है कोई रानी,
दुनिया में जो सबसे पहले,
जीवन का था जन्म हुआ,
पानी में पनपा था वो,
और सबसे ज्यादा अहम हुआ
नाम अमीबा था उसका,
और वो ही पहला जीवन था,
उसके बाद हुए थे हमसब,
और फिर सारा जीवन था,
जीवन चक्र चलाने को,
जो सबसे जरूरी बातें हैं,
एक दूजे पर निर्भरता से,
सब जग में जी पाते है,
कुछ रहते पानी में जिंदा,
कुछ धरती पर विचर रहे,
कुछ उड़ते उन्मुक्त गगन में,
कुछ जंगल में राज करें,
कुछ खाते हरी घास,
और कुछ खाते उनका मांस,
कुछ खाते फल और फूल,
कुछ की है पानी में सांस,
बच्चों इस तरह से रहते,
हम सब आपस में बंधे हुए,
एक दूजे पर हैं निर्भर,
और प्रकृति के नियम से सधे हुए,
देखो अगर हम सब ने,
नहीं माना इस नियम को
और अगर तोड़ा जो हमने,
मानवता के धरम को,
तो फिर क्या होगा सोचो तो??
सब कुछ हो जायेगा खत्म,
फिर ना होगी धरती प्यारी,
फिर न होगा कोई जन्म,
कैसी होगी बोलो तो,
धरती बिन जंगल, बिन पानी के,
कैसे बच पायेगा जीवन,
बिन पानी की रवानी के
आओ बच्चों हम सब मिलकर,
एक नया संकल्प करें,
बनी रहे पानी की रवानी,
जंगल बचे हवा स्वच्छ रहे।

03

मछली

- भारत की नदियों एंव अन्य मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र में मछलियों की लगभग 756 प्रजातियां पायी जाती हैं।
- केवल गंगा नदी में ही मछलियों की 143 प्रजातियां मौजूद हैं, जो कि भारत के मीठे जल में पायी जाने वाली प्रजातियों का 20 प्रतिशत है।
- गंगा नदी में पायी जाने वाली मछलियां स्वस्थ पारिस्थितिकी का सूचक हैं एंव आहार श्रृंखला का महत्वपूर्ण अंश है।
- गोल्डन महासीर, रोहू, कतला, बाटा, हिलसा आदि गंगा में पायी जाने वाली मछलियों की कुछ प्रमुख प्रजातियां हैं।

मछली रानी मछली रानी

मछली रानी, मछली रानी
नदिया में है कितना पानी,
पानी तो कम हो गया भैया,
सूख गये सब ताल तलैया,
गंगा में हो गया प्रदूषण,
जो थी भारत की आभूषण,
हम गंगा के हैं पहरेदार
साफ करें अपना घर द्वार
बिन वेतन के हैं सफाईकर्मी
काम करें सर्दी हो या गर्मी
कोई ना करे कभी ये विचार
करें सभी हम पर अत्याचार
सदियों से हम हैं भोजन का हिस्सा
कभी खत्म नहीं होता ये किस्सा
प्रदूषण भी इंसान बढ़ाये
सांस लेना भी दूभर हो जाय।

04 चिड़िया

- गंगा नदी के किनारे पक्षियों की 177 प्रजातियां निवास करती हैं।
- कुछ विशेष एंव कम पाई जाने वाली प्रजातियां गंगा के किनारे ही प्रजनन करती हैं।
- यह नदी के स्वस्थ पारिस्थितिकी तन्त्र के परिचायक हैं।
- पानी के प्रवाह में बदलाव, जलवायु परिवर्तन एंव मानवीय हस्तक्षेप के कारण इनकी संख्या कम हो रही है।

नदी किनारे चिड़ियों का डेरा

नदी किनारे चिड़ियो का डेरा
लौटें वहीं लगाकर वो फेरा
सरकंडों में घोंसले बनाती हैं
दिन ढलते ही छिप जाती है
पर कम हो रहे उनके आवास
जो कल थे नदिया के पास
आज मगर हो रही हैं कम
भुगत रही मानव के करम।

05

मगर

- मगर भारत में 15 राज्यों, विशेषकर गंगा नदी के जलबहाव क्षेत्र में पाये जाते हैं।
- इनकी बड़ी संख्या मध्य गंगा क्षेत्र बिहार एंव झारखंड तथा चम्बल नदी में पाई जाती है।
- मगर आकार में 4 से 5 मी0 तक लम्बे होते हैं। इनका थूथन मगरमच्छ प्रजाति में सबसे चौड़ा होता है।
- यह नदी, झील या अन्य जलनिकायों के किनारे घोंसले बनाकर रहते हैं।
- इनका गर्भकाल लगभग 62 दिन का होता है तथा एक बार में 20 से 40 अंडे देते हैं।
- ये मछली, उभयचर और सरीसृप मुख्यतः सांप एंव कछुये, चिड़िया तथा छोटे स्तनपायी आदि खाते हैं।
- खाल एंव मीट के लिये इसका शिकार किया जाता था नदी पर बांधो का निर्माण विकास गतिविधियां, खेती में विस्तार व रासायनिक खादों का प्रयोग, वास स्थल में कमी आदि के कारण इनकी संख्या मे कमी आई है।

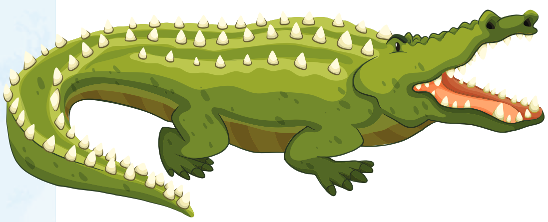

हम हैं गंगा के पहरेदार

हम हैं गंगा के पहरेदार,
दूर रहो सब खबरदार,
नाम है मगर हमारा भाई,
गंगा की हम करें सफाई,
रहें जहाँ बहता हो पानी,
नहीं हमारा कोई सानी,
चौड़ा थूथन है शान हमारी
गंगा मैया की हम हैं सवारी,

06

कछुए

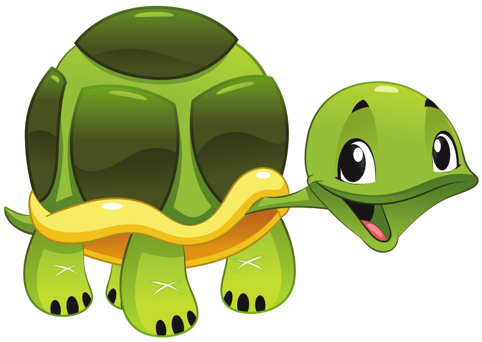

- भारत में पाए जाने वाली कछुओं की कुल 29 प्रजातियों में से 13 प्रजातियां गंगा नदी में पाई जाती हैं।
- गंगा नदी में नौ कठोर एंव चार मुलायम आवरण वाले कछुए पाये जाते हैं।
- इन 13 प्रजातियों में से 12 ताजा पानी एंव एक (बाटागुर बास्का) खारेपानी की प्रजाति है।
- कछुए मृत जैविक पदार्थों, मृत मछलियों की सफाई कर, मछली की संख्या, जलीय पौधों एंव घास को नियंत्रित कर नदी को स्वच्छ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- कछुए की आबादी में कमी के मुख्य कारण रेत खनन, प्राकृतिक आवासों का खत्म होना, अवैध शिकार एंव व्यापार के कारण मूल आबादी में कमी, जाल में उलझने के कारण दुर्घटना मृत्यु एंव बांध एंव बैराज से प्राकृतिक बहाव में परिवर्तन के कारण आवास स्थल में जलभराव या पानी की कमी आदि हैं।

नदिया की हम करें सफाई

नदिया की हम करें सफाई
नाम हमारा कछुआ भाई
भारत में हैं उन्तीस प्रजाति
गंगा में तेरह मिल पाती
मरी मछलियां, कूड़ा खाते हम
गंगा को प्रदूषण मुक्त बनाते हम।

07 ऊदबिलाव

- ऊदबिलाव एक स्तनपायी प्राणी है।
- गंगा बेसिन में ऊदबिलाव की तीन प्रजातियां पायी जाती हैं।
- ऊदबिलाव नदी के किनारे गुफाओं और घनी वनस्पतियों में रहते हैं।
- रात्रि में ये चट्टानी क्षेत्रों तथा मिट्टी में गड्ढे करके रहते हैं।
- यह छोटे जीवों और छोटी मछलियों को खाते हैं।
- नदी पर बांधों का निर्माण, विकास गतिविधियां, जलीय भूमि पर खेती, अवैध शिकार, जल प्रदूषण, प्राकृतिक वास स्थलों का विनाश एंव कृषि में रासायनिक खादों का प्रयोग इनके अस्तित्व के लिये प्रमुख खतरे हैं।

ऊदबिलाव नाम है मेरा

ऊदबिलाव नाम है मेरा,
नदी किनारे मेरा डेरा,
दिखता हूँ मैं नेवले जैसा,
काम नहीं पर ऐसा वैसा,
छोटी मछली और कीड़े खाता हूँ,
पारिस्थितिकी तंत्र मजबूत बनाता हूँ।

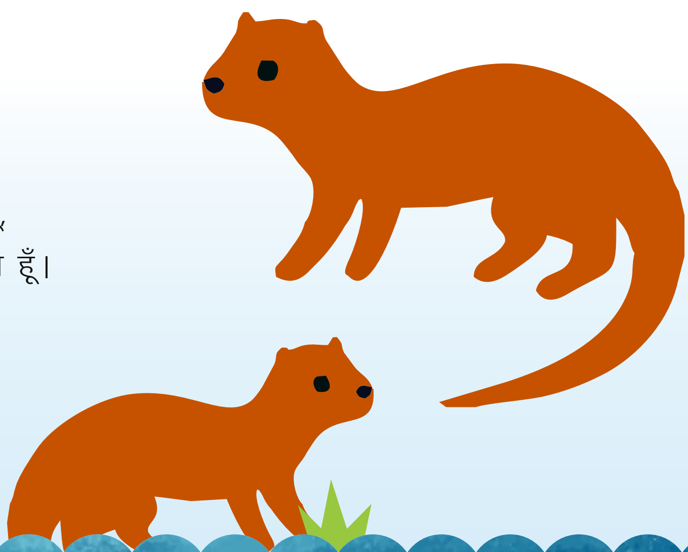

08

गांगेय डॉल्फिन

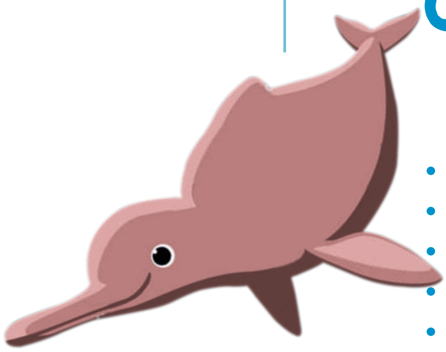

- गांगेय डॉल्फिन एक स्तनपायी प्राणी है।
- गांगेय डॉल्फिन को भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया गया है।
- नर डॉल्फिन 2 से 2.2 मी0 एंव मादा 2.4 से 2.6 मी0 लम्बी होती हैं।
- इनके लम्बे एंव पतले थूथन होते हैं। इनके सिर के ऊपरी भाग में नथुने होते हैं।
- गोल उदर, मध्य भाग गठीला एंव बड़े फ्लिपर (तैरने के हाथ) होते हैं।
- हर 2–3 वर्ष में एक बच्चे (कॉफ) को जन्म देती है। इनका गर्भकाल लगभग 9 से 10 माह का होता है।
- बांध एवं बैराज निर्माण के कारण वास स्थान का ह्रास एंव विखंडन, शिकार एंव दुर्घटना से मृत्यु, खाद्य प्रजातियों का अत्यधिक दोहन, नदी में यातायात हेतु बड़े जहाजों की संख्या बढ़ना एंव प्रदूषण के कारण नदी तल में बदलाव आदि इनकी प्रजाति हेतु मुख्य खतरे हैं।

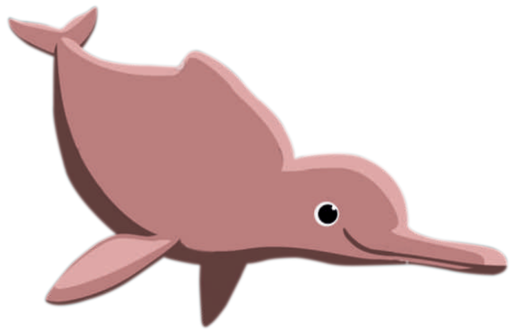

डॉल्फिन देखो बड़ी सयानी

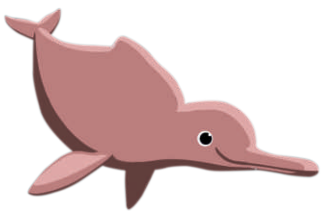

डॉल्फिन देखो बड़ी सयानी,
रहे वहाँ जहाँ साफ हो पानी,
मछलियाँ सारी अंडे देती,
डॉल्फिन लेकिन बच्चे जनती,
बात पते की असली है
पर वो तो नहीं मछली है
बच्चों को दूध पिलाती है
पानी में करतब दिखाती है।

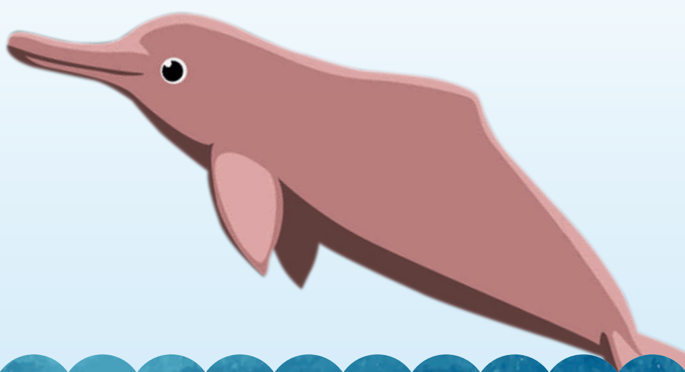

09

बगुला

- बगुला गंगा नदी के मध्य व निचले भाग में पाया जाता है।
- ये मध्यम आकार के पक्षी होते हैं जिनकी लम्बी टांगे और लम्बी धुमावदार गर्दन होती हैं।
- इनके पंख सफेद, चोंच पीले–नारंगी एंव पैर काले होते हैं।
- ये मुख्यतः मछली, मेंढक, कीड़े मकोड़े तथा कभी–कभी सांप भी खाते हैं।
- मादा बगुला एक बार में तीन से चार अंडे देती है। जिनसे तीन से चार सप्ताह में बच्चे निकलते हैं।
- इनके बच्चे लगभग छः सप्ताह में उड़ने योग्य हो जाते हैं।
- प्रदूषण, आवास स्थल का ह्रास व विखंडन, प्रजनन स्थलों का विखंडन आदि इनके अस्तित्व पर प्रमुख खतरे हैं।

बगुला खड़ा लगाकर ध्यान

बगुला खड़ा लगाकर ध्यान,
बनकर रहे बिल्कुल अन्जान,
जैसे ही दिखे कोई मछली,
जल्दी से उसने लपक ली,
किसानों का मित्र है वो
जानते हैं सभी हम जो
जब भी हल जोते किसान

बगुला चले पीछे गर्दन तान
कीड़े मकोड़े जैसे ही दिख जायें
फौरन ही वो चटकर जायें
गाय भैंसों से दोस्ती गांठी
मित्रता की मिसाल है गांठी
पारिस्थितिकी तंत्र बनायें मजबूत,
ये सब है प्रकृति के दूत।

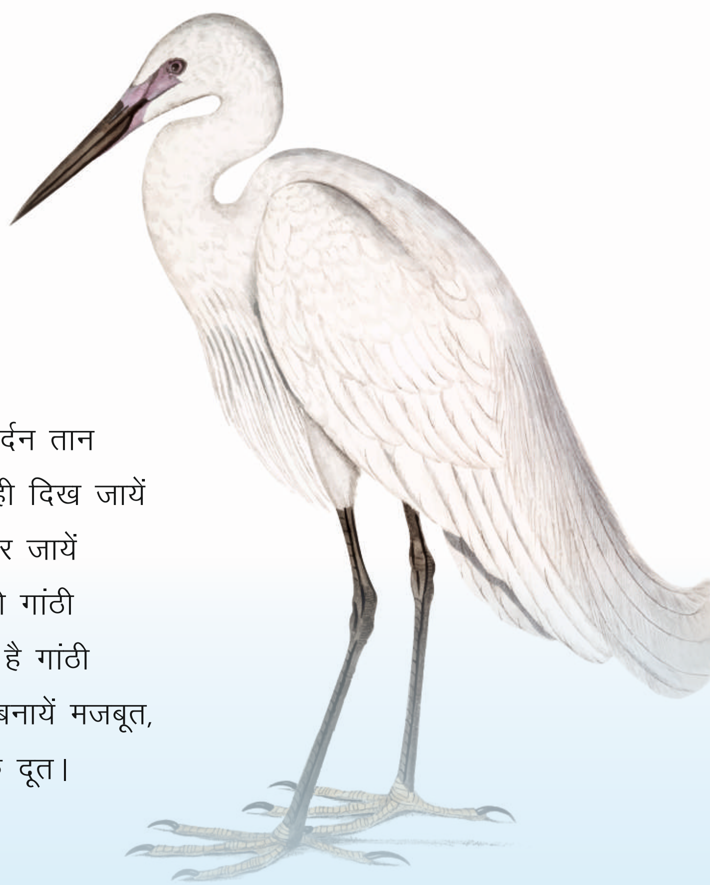

10

घड़ियाल

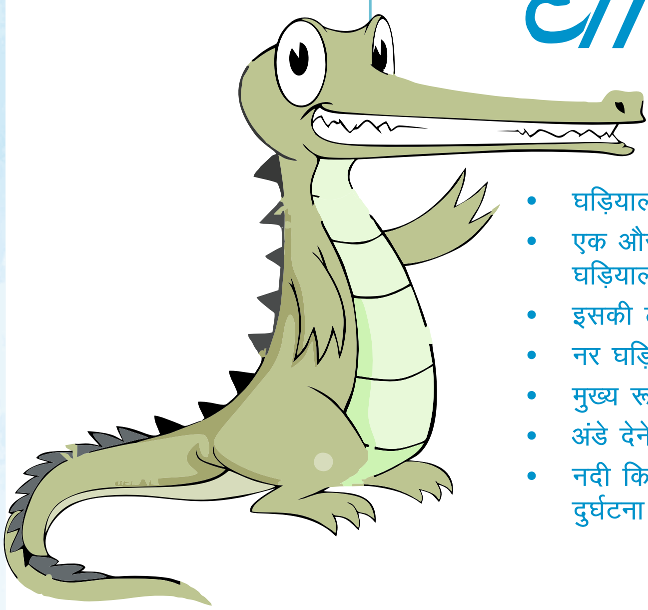

- घड़ियाल नदी में साफ, गहरे व तेज बहाव वाले स्थान पर पाये जाते हैं।
- एक औसत नर घड़ियाल की लम्बाई 3 से 5 मी0 तक होती है जबकि मादा घड़ियाल की लम्बाई 2.7 से 3.75 मी0 तक होती है।
- इसकी लम्बी थूथन होती है जिससे ये आसानी से मछली को पकड़ पाते हैं।
- नर घड़ियाल के थूथन पर घड़े के आकार की आकृति होती है।
- मुख्य रूप से मछलियां ही इनका भोजन हैं।
- अंडे देने और गर्मी लेने, ये रेतीले किनारों पर बैठतें हैं।
- नदी किनारे रेत खनन, आवास क्षेत्र का विखंडन, अवैध शिकार, जाल में फंस कर दुर्घटना आदि इनके अस्तित्व पर प्रमुख खतरे हैं।

गहरा पानी है मेरा घर

गहरा पानी है मेरा घर
देखूँ मैं फिर इधर उधर
रेत में रहता हूँ मैं पड़ा
नाक के आगे मेरे घड़ा
तभी घड़ियाल कहलाता हूँ
छोटी मछलियां खाता हूँ
जाल जब भी कोई फैलाता
उसमें अक्सर मैं फंस जाता
जीना दूभर हो गया है मेरा
सोचूँ कहीं और लगा लूँ डेरा।

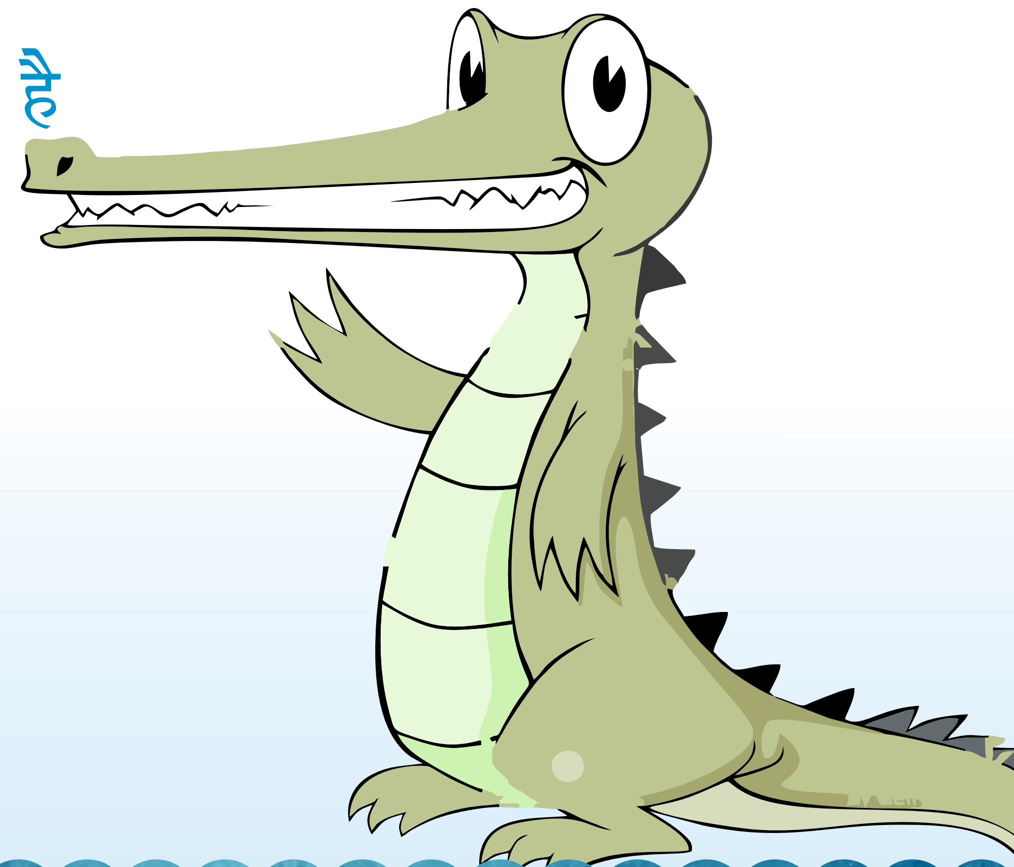

11 प्रवासी जलीय पक्षी

- प्रवासी जलीय पक्षी विशेष रूप से बतख एंव हंस प्रजाति अपने प्रजनन एंव शीतकालीन मैदानों के जुड़े पारिस्थितिकीय तन्त्र के संकेतक हैं।
- प्रवासी पक्षी शीतकाल में विभिन्न देशों से आते हैं ये जलीय निकायों, आर्द्रभूमि के आसपास रहते हैं।
- ये जलीय वनस्पति की संरचनात्मक विविधता के भी संकेत हैं।
- वे नदियों और आर्द्रभूमि में पौधों का परागण कर पारिस्थितिकी तंत्र में अपना योगदान देते हैं ।
- नदी के जलस्तर में कमी, आर्द्रभूमि की संख्या में कमी, अवैध शिकार व जलवायु परिवर्तन इनके लिये प्रमुख खतरे हैं।

प्रवासी पक्षी मेहमान हमारे

प्रवासी पक्षी मेहमान हमारे
दूर देश से आते सारे
लम्बी दूरी हैं तय करते
आते जाते कभी न थकते
शीत का प्रकोप जब बढ़ता
अपना देश उन्हें छोड़ना पड़ता
नदी, झील पोखर में आते
शीतकाल हैं यहीं बिताते
गर्मियों के शुरू होते ही
अपने देश वो फिर उड़ जाते
सदियों से ये दोहराते हैं
अगले बरस वापस आते हैं।

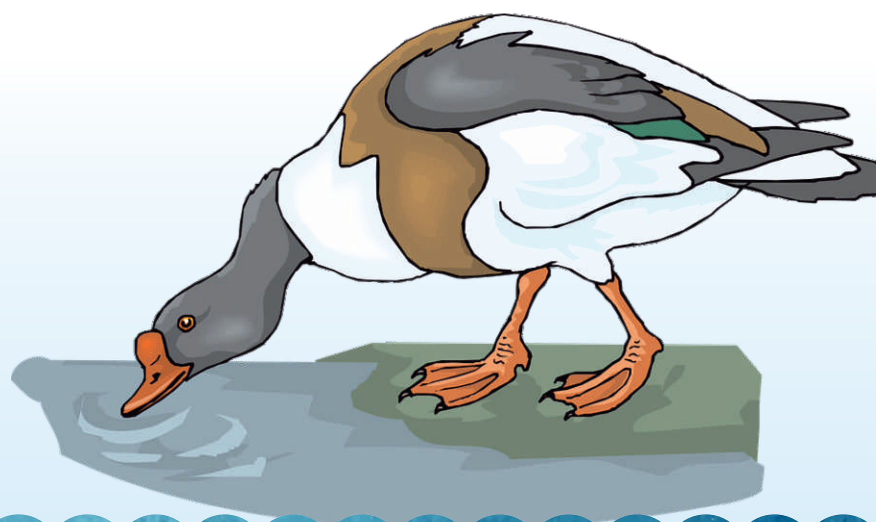

12 मेंढक

- मेंढक एक उभयचर प्राणी है जो जल एंव थल दोनों में रहता है।
- ये जल स्रोतों के आसपास पाये जाते हैं और पानी में या नमी वाली जगह पर अंडे देते हैं।
- इनके जीवन चक्र का एक भाग पानी में ही बीतता है।
- ये अच्छे पारिस्थितिकी तंत्र के सूचक हैं।
- गंगा में इनकी लगभग 90 प्रजातियां पायी जाती हैं।
- आवास में कमी, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, खेतों में कीटनाशकों का प्रयोग आदि के कारण इनकी संख्या में लगातार कमी हो रही है।

फुदक फुदक कर चाल दिखाऊँ

फुदक फुदक कर चाल दिखाऊँ
बिन पानी के रह ना पाऊँ
धरती पर भी है घर मेरा
दोनो जगह लगाऊँ डेरा
जलीय पर्यावरण का सूचक बन जाता
वर्षा चक्र का भी हूँ ज्ञाता
मैं हूँ प्राणी एक उभयचर

उभयचर मतलब जलचर– थलचर
पानी में भी रह लेता हूँ
धरती पर भी जी लेता हूँ
अपने बच्चे मुझे सबसे प्यारे
नन्हें मुन्ने मेरे राज दुलारे
नदिया के संग बहते हैं
सब मुझे मेंढक कहते हैं।

13 बाल गंगा प्रहरी

अपने जीवन में गंगा नदी के महत्त्व को हम नकार नहीं सकते। गंगा नदी से हम सभी किसी न किसी प्रकार से जुड़े हैं। ये जुड़ाव खेती बाड़ी से लेकर हमारे सारे धार्मिक रीति रिवाजों संस्कृति, आजीविका तक जुड़ा है।

सदियों से हमने लगातार किसी न किसी रूप में नदियों का दोहन किया है। लगातार इस लेने की प्रवृति के कारण हम प्रकृति के वरदान स्वरूप नदियों को लगातार नुकसान पहुंचा रहे है।

प्रकृति का नियम है कि यदि आप उससे कुछ लेते हैं तो बदले में कुछ देना भी होगा।

बच्चों हमें कुछ संकल्प लेने होंगे। इसी क्रम में गंगा प्रहरी बन कर अपनी भूमिका तय कर सकते है। क्योंकि आप लोग छोटे बच्चे हो तो आप होंगे बाल गंगा प्रहरी।

एक बाल गंगा प्रहरी के रूप में आप सब के कुछ दायित्व होंगे।

सबसे पहले तो आप को अपनी नदियों के बारे में जानना होगा।

उसमें रहने वाले जीव जंतुओं को पहचानना होगा। जानना होगा कि उनका क्या महत्व है एवं वे नदियों के पारिस्थितिकी तंत्र को किस प्रकार मजबूत बनाते हैं जिससे नदियों का पर्यावरण सुरक्षित रहता है। नदियों की सफाई में उनका क्या योगदान है आदि।

ये सब बातें आप सबको समझनी होंगी और एक बाल गंगा प्रहरी होने के नाते अपने साथियों, घरवालों तथा लोगों को समझानी होंगी।

चलो बनते हैं एक बाल गंगा प्रहरी।

बाल गंगा प्रहरी

हम छोटे–छोटे बच्चे
हम गंगा प्रहरी
हैं मन के बड़े ही सच्चे
हम बाल गंगा प्रहरी
नदिया पेड़ पहाड़
जंगल और हवा,
इनके भी हैं दोस्त अच्छे
हम बाल गंगा प्रहरी
नदियों को पहचानेंगे हम
पेड़ पहाड भी जानेगें
पर्यावरण की बात करेंगें
हम बाल गंगा प्रहरी
जैवविविधता को समझेंगे
सबको भी समझायेंगे
जन–जन को जागरूक करेंगे
हम बाल गंगा प्रहरी
गंगा में ना हो प्रदूषण
लोगों को समझायेंगे
जलीय जीवों का योगदान
लोगों को बतलाऐंगे
उनके संरक्षण की बात करेंगे
हम बाल गंगा प्रहरी
गांव शहर हों स्वच्छ
नदियाँ अनवरत बहती रहें
कचरा प्रबंधन की बात करेंगे
हम बाल गंगा प्रहरी
जंगल पर्यावरण हो सुरक्षित
स्वच्छ हवा हो, स्वच्छ हो पानी
खुद को भी साबित कर देंगे
हम बाल गंगा प्रहरी।

14

पानी

पानी का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है इससे हम सब ही परिचित हैं।

बदलते पर्यावरण तथा बढ़ते प्रदूषण के कारण जहां एक ओर वर्षाचक्र प्रभावित हुआ है जिसका असर खेती किसानी पर पड़ रहा है, वही प्रदूषित पानी पीने के लायक नहीं रह गया है।

बिगड़ते पर्यावरण के कारण ग्लेशियर जिनसे कि प्रमुख नदियां निकलती हैं, पिघल रहे हैं, जिससे नदियों का पानी घट रहा है। धरती में पानी का स्तर काफी नीचे चला गया है जो कि भविष्य की भयावहता को दर्शाता है।

इन विकट परिस्थितियों से निकलने के लिए हमें अपने अंदर तथा अपने आस पास कुछ परिवर्तन लाने होंगे।

पानी आवश्यकतानुसार उपयोग करना होगा। पानी का संरक्षण करना होगा। वर्षाजल का संग्रहण करना होगा। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों को पहचानना होगा और इनसे होने वाली हानियों के विषय में खुद जागरूक होना होगा तथा लोगों को भी करना होगा, ये छोटे–छोटे बदलाव हमारे भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं।

बिन पानी सब सून

सब कुछ ही चलता रहता है,
दिन हो या हो चाहे रात
पानी बिना न चलता जीवन
बाकी की क्या होती है बिसात
पानी ही सांसे थामे है
जीने का आधार है पानी
पानी में पलते हैं जीवन
हम सबका अधिकार है पानी
लेकिन अब तो समय का चक्का
उल्टा ही चल पड़ा है भाई
पानी जो सबसे सस्ता था
आज उसी की छिड़ी लडाई
नदियां नाले सूख रहे हैं
बदल रहा मौसम का मिजाज
खेती बाड़ी अब क्या होगी
कैसे पैदा होंगे अब अनाज
पीने लायक पानी अब तो
कहां कहीं मिल पाता है
स्रोतों की अब बात नहीं है
बोतल से ही नाता है
अब भी गर ना सोचा तो
पानी ना रह जायेगा
खेती की तो बात छोड़ दो
कोई न जी पायेगा
पानी को संरक्षित कर लो
बूंद–बूंद से भरता सागर
खेती बाड़ी लहरायेगी
भरी रहेगी मुनिया की गागर।